।। ओ३म्।।

कण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

अमृत वचन

जो व्यवहार आपको अच्छा नहीं लगता, वो व्यवहार दूसरों के साथ भी मत करो।।

वर्ष ३१, अंक १२ एक प्रति : २ रुपये

सोमवार १८ फरवरी, २००८ से २४ फरवरी, २००८ तक

विक्रमी सम्वत् २०६४ दयानन्दाब्द : १८४

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ वार्षिक : १०० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल: aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 के सहयोग से

स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव

एवं वेदवाणी प्रसारण के तीन वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में

भव्य भजन संध्या का आयोजन

फाल्गुन कृष्ण दशमी वि०सं० २०६४ तद्नुसार रविवार दिनांक २ मार्च, २००८

स्थान : आर्यसमाज कैलाश, ग्रेटर कैलाश, पार्ट-१, नई दिल्ली

कार्यक्रम : सायं ३ से ७ बजे | यज्ञ : सायं ३.१५ बजे | भजन संध्या : सायं ४.१५ बजे

इस अवसर पर गत वर्षों में वेदवाणी प्रसारण में सहयोग देने वाले महानुभावों को सम्मानित भी किया जाएगा।

समस्त आर्यजन परिवार सहित में पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करें एवं पुण्य के भागी बनें।

निवेदक :- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०) - १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१, दूरभाष : ०११-२३३६०१५० Email : aryasabha@yahoo.com

महर्षि दयानन्द के निर्वाण के 125 वर्ष

योजना का एजेण्डा तय करने हेतु केन्द्रीय समिति की बैठक महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण के १२५वें वर्ष के आयोजन हेतु बनी सार्वदेशिक समिति का एजेण्डा तैयार करने हेतु एक उच्च स्तरीय बैठक समिति के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल की की अध्यक्षता में एमडीएच हाउस, कीर्ति नगर, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। बैठक में सार्वदेशिक सभा के मन्त्री **श्री प्रकाश आर्य,** दिल्ली सभा के प्रधान **ब्र० राजसिंह आर्य,** मध्य भारत सभा के उप प्रधान **श्री भगवानदास अग्रवाल,** आर्यवीरांगना दल दिल्ली की ओर **श्रीमती मदुला चौहान,** आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान **श्री धर्मपाल आर्य,** आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश तथा आर्य विद्यालयों से सम्बन्धित प्रमुख अधिकारी सम्मिलित थे।

बैठक में इस बार पर विस्तार से चर्चा हुई कि यह वर्ष किस रूप से आयोजित किया जाए। सदस्यों का विचार था इस वर्ष में बड़े–बड़े आयोजनों के स्थान पर आम व्यक्तियों तक स्वामी दयानन्द जी की बातों, उनके सिद्धान्तों, मान्यताओं को पहुंचाने के कार्य करने चाहिएं। इसके साथ ही टी०वी०, एफ०एम० रेडियो, समाचार पत्रों तथा अन्य प्रचार माध्यमों द्वारा स्वामी दयानन्द जी के चित्र तथा उनके सन्देशों को अधिक से अधिक नागरिकों तक कैसे पहुंचाया जाए, इस

प्रतीक चिह्न (लोगो) होली मंगल मिलन के अवसर पर जारी होगा

पर विस्तार से चर्चा हुई। सभी उपस्थित सदस्यों का उत्साह बढ़ाते हुए समिति के **अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी** ने कहा कि हमें इस कार्य को इस प्रकार से करना चाहिए कि हम करोड़ों भारतीयों तक अपनी बात को पहुंचा सकें। उन्होंने यह भी कहा कि इस कार्य में प्रत्येक वर्ग को जोड़ा जाए ताकि योजना को पूर्ण करने में हम सफल हो सकें। चर्चा में यह भी तय किया गया कि इस विशेष अवसर पर केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों से विशेष मांगे की जाएं, उन मांगों के एजेण्डे पर भी विस्तार से चर्चा हुई। साथ ही साथ आर्यसमाज की सभी प्रमुख ईकाईयों – प्रान्तीय सभाओं, आर्यसमाजों, आर्यवीर दल, आर्य विद्यालयों, गुरुकुलों तथा अन्य सभी के लिए अलग–अलग एजेण्डा तैयार किया जाए। इस अवसर पर ऐसी पुस्तकें भी तैयार कराई जाए जो कि बच्चों के हृदय में स्वामी जी के जीवन को आलोकित कर दे। अपेक्षाकत बड़े बच्चों के लिए भी कुछ ऐसा साहित्य चयनित किया

– शेष पष्ठ ६ पर

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव (२ मार्च, ०८) को उत्साहपूर्वक मनाएं

- कै० देवरत्न आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने समस्त आर्यसमाजों से आह्वान करते हुए कहा है कि भारत एवं विश्व की समस्त आर्यसमाजें २ मार्च, ०८ को स्वामी दयानन्द जन्मोत्सव को उत्साहपूर्वक आयोजित करें। उन्होंने कहा कि आर्यसमाजें अपने साप्ताहिक सत्संगों में स्वामी जी की जीवनी पर प्रकाश डाला जाए, स्वामी दयानन्द

को समर्पित गीतों को इस अवसर पर प्रस्तुत किया जाए। आर्यसमाजों में तथा बाहर साप्ताहिक सत्संगों के उपरान्त विशेष प्रसाद/मिष्ठान का वितरण करें। इस अवसर पर स्वामी दयानन्द जी की जीवनी को सभी सदस्यो में वितरित करें तथा सभी को पढ़ने की प्रेरणा करें। स्वामी दयानन्द जी के सुन्दर चित्र को अपने घरों तथा कार्यालयों में उचित स्थान पर लगाने की प्रेरणा सभी सदस्यों को दी जाए। स्वामी दयानन्द जन्मोत्सव दयानन्द दशमी २ मार्च, ०६ से बोधोत्सव ६ मार्च, ०८ तक प्रतिदिन इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करें जिससे कि आम जनमानस को स्वामी दयानन्द जी के विषय में जानकारी हो। इस अवसर पर यदि सार्वजनिक स्थानों- पार्को आदि में यज्ञो एवं प्रसाद वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया जाए अधिकाधिक प्रचार हो सकता है।

– प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

गतांक से आगे

महर्षि के निर्वाण से समस्त भारत में शोक 213

— स्व० स्वामी सत्यानन्द जी महाराज

महाराज के निर्वाण के अनन्तर, कई दिनों तक सारे भारतियों के मानस आकाश में शोक का मेघमण्डल मण्डराता रहा। भारत–भक्तों के हृदय पर गहरी चोट आई। सुधारक दल का दाहिना हाथ गिर गया। अबलाओं के पक्ष–पोषक दीन–दुर्बलों के सहायक और अनाथों को सनाथ कराने वाले मस्त योगी ने अपनी काया, कन्दरा त्याग दी, पर्ण–कुटी छोड़ दी। वह एकाएक चुपके से स्वर्गधाम को पधार गया। परन्तु उनकी माधुरी मूर्ति आँखों के सामने वैसी की वैसी ही फिरती रही।

कुछ काल तक तो आर्य समाजों के साथ सबने सहानुभूति का प्रकाश किया। उनके गहरे घाव पर मरहम–पट्टी की। परन्तु मत–मतान्तरों को ममता और अपनी अपनी अहन्ता के कारण बहुत से मतवादी पुरुष इस परिजात पादपपंक्ति को परिरक्षण रहित समझने लगे। इस नन्दनवन को महामाली के बिना उजड़ा हुआ मानने लगे। नगर नगर और ग्राम ग्राम में आर्यों का विरोध होने लगा। विचक्षण विज्ञानियों ने स्वामी जी के स्वर्गारोहण पर आर्य समाज के जीवन दनि अपनी उंगलियों पर गिन लिए। उन्होंने अनुमान कर लिया कि इन नौका का न्याय और नीतिनिपुण नाविक इसे भंवर से तो निकाल गया है परन्तु मंझधार से बाहर नहीं कर सका। अब उस कुशल कर्णधार के बिना यह निपट अनाड़ियों के हाथ पड़कर आप ही आप डूब जाएगी।

आर्य समाजियों के हृदय कई दिनों और मासों तक डगमगाते रहे। उनके मनों में निराशा का राज्य बना रहा। उनके चित्तों का उत्साह भग्न हो गया उनके साहस को, कहीं ठौर ठिकाना न रहा। वे अपने को जहां तहां निस्सहाय और निरवलम्ब पाते थे। परन्तु थोड़े ही मासों के अनन्तर आर्यों की आशा लता में तप्त ताम्र वर्ण, सुकोमल कोंपल निकल आई उनकी सेवक सेना के सुचतुर संचालक सेनापति का काम करने लग गए। वे जगद्गुरु की जगाई जोत को जी–जीवन से बचाए रखने में प्रयत्नशील हो गए।

जैसे भूमण्डल भर को भयभीत करने वाले भारी भूकम्प से समुद्र कुछ पीछे हटकर फिर चौगुने बल से आगे बढ़ता है, उसी प्रकार भारी निराशा के अनन्तर आर्यसमाजियों का उत्साह सागर और प्रबलता से उछल उछलकर ऊंचे किनारों पर से भी पार होने लगा। नगर और ग्राम ग्राम में धर्म ध्वनि की गूंज सुनाई देने लगी। उनकी धर्म-प्रचार की तत्परता ने, सुधार की अनोखी लगन ने, धर्मचर्चा के विचित्र चातुर्य ने, शास्त्रार्थों के निर्भय भाव से देखने वालों की आंखों में चकाचौंध लगादी। आर्यों का 'नमस्ते' का मधुर नाद उस समय मनोमोहन महा मन्त्र था। इसको सुनते ही आर्यजन की छाती प्रेम से उछलने लगती। वह आगन्तुक के मुख से यह मन्त्र सुनकर उसे गले लगा लेता। उसे, उसके नाम धाम की पूछताछ की भी आवश्यकता न रहती। इस महामंत्र के पुण्य पाठ ही से परम विश्वास का प्रकाश हो जाता। भेद–भावना मिटाकर, भ्रात्–भाव के सूत्र में मनों के मनके पिरोने के लिए इस महामन्त्र का मुख से उच्चारण करना ही पर्याप्त समझा जाता।

उस समय मिलाप में एक अनुपम माधुर्य्य आ गया था। संहति और संघ का बड़ा महत्व माना जाता था, लोगों में नया पुरुषार्थ, नूतन प्रेम, नवीन जीवन नव उद्योग और लगन उत्पन्न हो गई। जैसे आकाश में धमा चौकड़ी मचाने वाला मेघ मंडल वर्षा में हिमालय पर बरसकर, कार्तिक मास में सर्वथा शान्त हो जाता है और नील नभ में उसकी एक टुकड़ी भी दिखाई नहीं देती। परन्तु वही मेघमाला समुह, उस गिरिराज के अनेक अंगों में से नदियों के रूप में, नालों के आकार में छोटी कूलों की आकति में, झरझर झरते झरनों की काया मं, टप टप टपकते बिन्दुओं के वेश में, स्रोतों के स्वरूप में अवतार–धारण करके अनेक मार्गों से बहकर, भारत के नाना भू–भागों को हरा भरा करने लगता है, वनों के दावानल तक को शान्त कर देता है। उसी प्रकार, महर्षि धर्म–मेघ बन कर बरसों निरन्तर वर्षा करते रहे और अन्त को कार्तिक मास ही में शान्त हो गए, परन्तु उनके भावों के जीवनांश, आर्य वीरों का अवतार–धरण कर देश देशान्तरों में विविध प्रकार से धर्म प्रसाद बांटने लगे। — **'श्रीमद्दयानन्द-प्रकाश' से**

क्रमशः

रतनदेवी आर्य कन्या सी० सै० स्कूल को बेचने का षड़यन्त्र : कुछ तथ्य

पूर्व चेयरमैन जितेन्द्र धवन व पूर्व मैनेजर सुरेन्द्र गम्भीर ने रची सारी साजिश

षड़्यंत्रकारियों को संरक्षण देने में जुटे वैद्य इन्द्रदेव व अन्य

रतनदेवी आर्य कन्या सी०सैकेण्ड्री स्कूल की स्थापना सन् ५० के दशक में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा की गई थी। विद्यालय की कुछ जमीन दान से तथा कुछ क्रय की गई थी। काफी प्रयासों के बाद इस विद्यालय को दिल्ली प्रशासन से मान्यता प्राप्त हुई थी। इसी क्रम में यह विद्यालय निरन्तर उन्नति करता रहा तथा इसमें इसी के साथ एक छोटा पब्लिक स्कूल भी खोला गया। विद्यालय को दिल्ली प्रशासन से अनुदान प्राप्त होता था, जो कि अब दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा दिया जा रहा है। इसकी प्रबन्ध समिति का गठन नियन्त्रण तथा निर्देशन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा किया जाता रहा। पंजाब सभा के त्रिशाखन के पश्चात् यह विद्यालय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नियन्त्रण में आ गया। सभा की ओर से अन्य अधिकारियों के अलावा श्रीमती ईश्वरी देवी धवन इस विद्यालय के अध्यक्ष पद पर काफी समय तक कार्य करती रहीं। उनकी मत्यु के पश्चात् उनके पुत्र श्री जितेन्द्र मोहन धवन अध्यक्ष पद पर रहे। आर्यसमाज के संगठन में गत दिनों अव्यवस्था रही और इसी का लाभ उठाकर सभा द्वारा पूर्व में गठित समिति के अधिकारियों ने इस विद्यालय को बेचने का षड़यन्त्र आरम्भ कर दिया। उन्होंने इस विद्यालय को श्रीमती रतनदेवी एजूकेशन सोसायटी के नाम की संस्था, जिसका सभा के रिकार्ड में आज से पूर्व कभी नाम नहीं आया था, को बेचने का षड़यन्त्र रचा।

आर्थिक रूप से अत्यधिक कीमत रखने वाली सम्पत्ति को गलत नीयत से हडपने के इस षड़यन्त्र में विद्यालय की प्रधानाचार्या को भी सम्मिलित कर लिया गया। और शिक्षा विभाग में इस आशय का प्रस्ताव भेज दिया गया कि उपरोक्त विद्यालय रतनदेवी आर्य कन्या सी०सैकेण्ड्री स्कूल की प्रबन्ध समिति का तीन वर्षो के लिए गठन श्रीमती रत्नदेवी एजुकेशनल सोसायटी द्वारा कर दिया गया है। यह अपने आप में यह इस सारे किए जा रहे षड़यन्त्र की पराकाष्ठा थी। और यह पत्र भी विद्यालय के सरकारी निरीक्षण के दौरान ही अधिकारियों को दिया गया।

इस षड़यन्त्र की खबर मिलते ही सभा मन्त्री श्री शिवशंकर गुप्ता जी को इस षड़यन्त्र की जांच करने के लिए कहा गया। श्री गुप्ता जी ने अपनी रिपोर्ट सभा प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य जी के सम्मुख प्रस्तुत की। सभा प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य ने रिपोर्ट पर कार्यवाही करते हुए तुरन्त नई समिति का गठन कर दिया साथ ही इस षड़यन्त्र में शामिल अधिकारियों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही करने का भी निर्णय लिया गया। जब इस प्रकार की कार्यवाही सभा द्वारा की गई तथा सम्पत्ति की रक्षा के लिए हर सम्भव प्रयास किए जाने लगे तब इस षड़यन्त्र के पीछे छिपे असली चेहरे सामने आने आरम्भ हो गए। जिन लोगों ने इतनी काली करतूत करके करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति को हड़पने का षड़यन्त्र रचा था, उन्हें संरक्षण देने वाले रातों–रात पैदा हो गए। उनकी करतूतों को पूरी तरह से जानते हुए उनके उस षड़यन्त्र में सहायता देने के लिए तथा उनका बचाव करने के लिए अपने आपको दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान कहने वाले वैद्य इन्द्रदेव जी ने उनको एक तथाकथित नकली लैटर पैड पर प्रबन्ध समिति के गठन का दे दिया, जिसमे मेजर डॉ० रविकान्त तथा वेदव्रत शर्मा का नाम भी सम्मिलित है। ऐसी स्थिति में पाठक तथा आर्यजन विचार करें कि सभा किस–किस के विरुद्ध कार्यवाही करे। उनके जो विद्यालय को बेचने पर उतारु हैं या उनके, जो इस कार्य में उनका न केवल समर्थन कर रहे हैं अपितु उन्हें बचाने का कार्य भी कर रहे हैं।

सभा अधिकारी श्री शिव शंकर गुप्ता एवं श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी इस सारे प्रकरण में व्यापक जानकारी प्राप्त कर रहे हैं तथा दोषियों के खिलाफ आवश्यक कार्यवाहियां की जा रही हैं।

आर्यजनों को विचार करना होगा कि जो लोग संगठन को तोड़ने का कार्य करते आ रहे हैं न केवल तोड़ने का कार्य कार्य बल्कि उन लोगों को भी शैह दे रहे हैं जो आर्यसमाज की सम्पत्तियों को हड़पने की कोशिशों में रत हैं, ऐसे लोगों के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाए। आर्यसमाज के संगठन के पास पहले ही अपार समस्याएं हैं उनमें यदि इस प्रकार के अन्य कार्य भी जुड़ जाएं तो विचारें कि सभा अपने सीमित साधनों में क्या–क्या कर सकेंगी।

आओ मिलकर ऐसे तत्वों को पहचानकर उनका मुकाबला करें जो आर्यसमाज के बढ़ते हुए कार्यों में बाधक हैं तथा निरन्तर आर्यसमाज को खोखला करने में लगे हुए हैं। ❑

योग का महत्त्व

— ज्ञानेश्वर आर्य, दर्शनाचार्य

मनुष्य ने चाहे कितनी ही भाषाओं, विद्याओं, कलाओं को सीख लिया हो, कितनी ही उपाधियों, यश, प्रतिष्ठा, धन–ऐश्वर्य को क्यों न प्राप्त कर लिया हो, जीवन पथ पर रोग, अभाव विश्वासघात, हानि, वियोग, अपमान, अन्याय से सम्बन्धित दुःख आ ही जाते हैं। ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में मनुष्य चिन्तित, निराश एवं अशान्त हो जाता है। सारी आशाएं तथा कल्पनाएं नष्ट हो जाती हैं, सब कुछ अन्धकारमय दिखाई देता है। घटनाओं से सम्बन्धित विचारों पर नियंत्रण न रख पाने के कारण मनुष्य अत्यन्त क्षुब्ध अथवा पागल सा हो जाता है। कोई भी समाधान न प्राप्त कर सकने के कारण उत्पन्न हुए महादुःख से बचने के लिए कुएँ में गिरकर, विष खाकर, मिट्टी का तेल डाल–आग लगाकर, गाड़ी के नीचे आकर, फाँसी के फन्दे पर लटकाकर या अन्य किसी प्रकार से जीवन को ही समाप्त करने की सोचता है और कर भी क्या लेता। अथवा क्रोध के वशीभूत होकरदूसरों का बहुत बड़ा अनिष्ट कर देता है, फिर चाहे परिणाम स्वरूप जीवन भर पश्चाताप की अग्नि में क्यों न जलना पड़े या जेल के बन्धन का जीवन क्यों न काटना पड़े।

मन में उठने वाले इन प्रतिकूल विचारों को रोकने में यदि व्यक्ति समर्थ हो अथवा इन विचारों से प्रभावित न हो, अथवा इन समस्याओं का यथोचित समाधान निकाल ले, तो वह ईर्ष्या–द्वेष आदि मानसिक रोग ऐसे हैं, जिनका समाधान धन–सम्पत्ति से कदापि संभव नहीं हो सकता है। इन सब रोगों का समाधान तो आत्मा–परमात्मा सम्बन्धी अध्यात्मविद्या को पढ़, सुन समझ तथा व्यवहार में लाने से ही संभव है। मनुष्यों के कल्याणार्थ इन अध्यात्म विद्याओं का वर्णन हमारे पूज्य ऋषियों ने अपने दर्शनों में विस्तार से किया है।

सूक्ष्मता से निरीक्षण करने पर यह निष्कर्ष स्पष्ट ही ज्ञात होता है कि दर्शनों में वर्णित आत्मा, परमात्मा, मन, बुद्धि, संस्कार, दोष, कर्म, कर्म-फल, पुनर्जन्म, बन्धन-मुक्ति, सुख-दुःख आदि सूक्ष्म तत्वों के यथार्थ स्वरूप को न समझने के कारण ही आज सम्पूर्ण मानव समाज में हिंसा, जूठ, छल कपट, चोरी जारी तथा अन्य नैतिक दोष उत्पन्न हो गये हैं। यदि मनुष्य शरीर, मन, इंद्रियों के पीछे इन सबके नियंत्रक चेतन तत्व 'आत्मा' को तथा दश्यमान विशाल ब्रह्माण्ड के पीछे विद्यमान अदश्य, नियंत्रक चेतन तत्व 'परमात्म' को जान ले, तो विश्व की सरी समस्याएं सरलता से दूर हो जायें।

वैदिक काल में मन इन्द्रियों को रोककर आत्म–साक्षात्कार करने की गुरूकुल में पढ़ने जाता था, तब से ही आचार्य उसे प्रातःकाल ब्रह्म–मुहूर्त में उठाकर, एकान्त–स्थान में बिठाकर, आसन लगवाकर, आँखें बन्द कराकर, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, लगाने जैसी सूक्ष्म क्रियाएं सिखाना प्रारम्भ कर देता था, जैसे कि ऋषि मुनि लोग स्वयं किया करते थे। यह क्रिया मत्यु पर्यन्त चलती रहती थी, चाहे वह अभ्यासी किसी भी आश्रम में क्यों न हो, किसी भी व्यवसाय को क्यों न करता हो।

दर्शनों में इस क्रिया को 'योग' (समाधि–उपासना) नाम से कहा गया है। जीवात्मा चेतन है अर्थात ज्ञानी है, कर्ता है, मन आदि जड़ पदार्थों का चालक है। जो मनुष्य अपने मन को समस्त सांसरिक विषयों से हटाकर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, नित्य, निराकार, पवित्र तथा आनन्दस्वरूप परमेश्वर में स्थित कर लेता है, वह समस्त शारीरिक तथा मानसिक दुःखों से रहित हो जाता है और ईश्वर से ज्ञान, बल, आनन्द, निर्भयता स्वतंत्रता आदि गुणों को प्राप्त करता है। यही योगसाधना का फल है।

इसी योगाभ्यास से ही व्यक्ति अपने मन पर पूर्ण नियंत्रण करके जिस विषय पर मन को लगाना चाहता है, लगा देता है, और जिस विषय से मन को हटाना चाहता है, हटा लेता है। मन को नियंत्रण में रखने से ही वह प्रसन्न रहता है। योगाभ्यासी की एकाग्रता बढ़ती है, स्मति–शक्ति विकसित होती है तथा बुद्धि सूक्ष्म होती है। इन सब आध्यात्मिक सम्पत्तियों से उसके सारे कार्य सफल होते हैं। योगाभ्यासी अपने मन में विद्यमान काम, क्रोध, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि के कुसंस्कारों को स्पष्ट रूप से अनुभव करके, उनको विविध उपायों से नष्ट करने में सफल हो जाता है। इन्हीं संस्कारों की विद्यमानता के कारण वह अनिष्ट कार्यों को करके दुःखों को प्राप्त होता है।

समस्त दुःखों से निवत्ति, मुक्ति प्राप्त कर लेने पर ही होती है। मुक्ति अविद्या के संस्कारों के नष्ट होने पर संभव है। अविद्या के संस्कार ईश्वर साक्षात्कार के बिना नष्ट नहीं हो सकते, ओर ईश्वर साक्षात्कार समाधि के बिना नहीं हो सकता।समाधि चित्तवत्ति निरोध का नाम है। चित्तवत्तियों का निरोध यम–नियम आदि योग के आठ अंगों का पालन करने से होता है। इन यम–नियमों से लेकर समाधि और आगे मुक्ति तथा अन्य समस्त साधकों का सम्पूर्ण विधि विधान ऋषियों द्वारा लिखित दर्शन ग्रन्थों में विद्यमान है।

— दर्शन योग महाविद्यालय,
आर्य वन, रोजड़, पत्रा०सागपुर,
साबरकांठा (गुजरात)

उपर्युक्त सभी अनर्थों से बच सकता है। काम, क्रोध, मोह, अहंकार,

इस क्रिया का इतना अधिक महत्व था कि पाँच वर्ष का छोटा सा बालक जब

बोध कथा

आत्मिक संसार की कहानी

– महात्मा आनन्द स्वामी

हमारे टैगोर जी थे न ! महाकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जिनका लिखा हुआ 'जन–गण–मन' हमारे देश का राष्ट्रीय गीत बन गया है और जिन्हें साहित्य के लिए संसार का सबसे बड़ा पुरस्कार 'नोबल प्राइज' मिला था, एक बार लाहौर आए तो मैं उन्हें मिला। कितनी सुन्दर, शान्त मूर्ति थी उनकी। बिल्कुल एक ऋषि से प्रतीत होते थे वे। लाहौर में लाला धनीराम भल्ला के यहां ठहरे थे।

महाकवि ने भल्ला जी की कोठी में उपनिषदों की कथा आरम्भ की। टैगोर जी अंग्रेजी में बोलते थे। पण्डित ऋषिराम जी हिन्दी में उसका अनुवाद करते थे। एक बार पहुंचा तो वे कर्म–सिद्धान्तको समझाने के लिए अपनी एक कविता कह रहे थे। कविता बंगला में थी। इसका अनुवाद वे अंग्रेजी में सुना रहे थे। कविता का शीर्षक था – बन्दी। यह बन्दी जेल में पड़ा है, इसके चारों ओर ऊंची–ऊंची दीवारें हैं। हाथों में हथकड़ियों, पावों में बेड़ियां। दीवार में एक छोटी–सी खिड़की है, जिस पर लोहे की मोटी–मोटी सलाखें लगी हैं। कैदी बाहर वालों को देख सकते हैं, अन्दर का मार्ग नहीं।

कवि इस बन्दी के पास पहुंचता है। पूछता है – 'बन्दी!' तुझे किसने कैद किया है? किसने ये दीवारें खड़ी की हैं? किसने ये जंजीरें बनवाई हैं? किसने इन जंजीरों से तुझे जकड़ दिया है?'

और बन्दी सिर झुकार कहता है – 'मैंने स्वयं ही अपने–आपको कैद किया है। मैंने स्वयं ही इन दीवारों का निर्माण किया है। मैंने स्वयं ही इन जंजीरों का बनाया है। स्वयं ही अपने को इनमें जकड़ लिया है, परन्तु अब स्वयं ही विवश हो गया हूं।'

यह है आत्मिक संसार की कहानी! यह ठीक है कि तुम विवश हो गए हो, परन्तु किसी दूसरे ने तुम्हें विवश नहीं किया। किसी दूसरे ने तुम्हारे लिए जेल नहीं बनाई। इस जाल ने तुमको नहीं पकड़ रखा है, तुमने इस जाल को पकड़ रखा है।

यह है मोह का जाल जिसमें तुमने स्वयं को जकड़ रखा है। इस जाल से बाहर आए बिना मानसिक तप तुमसे होगा नहीं। कल्याण का मार्ग तुम्हें मिलेगा नहीं। ❑

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय - प्रथम पादः (27)

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'

श्रुतेस्तु शब्दमूलत्वात्।। २७।।

अर्थ :- (श्रुतेः) श्रुति से (तु) तो (शब्दमूलत्वात्) शब्द के आश्रित होने से।

भावार्थ :- श्रुति से यह ज्ञात होता है ब्रह्म प्रकति को जगत के रूप में परिणत करता है। श्वेताश्वतर उपनिषद् (६.१२) में कहा है–

''एकं बीजं बहुधा यः करोति।।''

अर्थात् जो ब्रह्म एक प्रकति रूपी बीज को अनेक रूपों में प्रकट कर देता है। अब यह बात तो ब्रह्म ही जानता है, कि वह सम्पूर्ण प्रकति को जगत् के रूप में परिणत करता है या उसके एक अंश के। इसे जानना जीव की सामर्थ्य से बाहर है।

'सम्पूर्ण ब्रह्म में सष्टि की रचना का संकल्प होने पर सारी प्रकति कार्यरूप में परिणत हो जाए।' ऐसी आशंका होने पर यह जान लेना आवश्यक है कि प्रकति का वास्तविक स्वरूप क्या है? जिसके परिणाम की कल्पना की जाए। प्रकति को शास्त्रों में त्रिगुणात्मिका कहा है और प्रकति के तीन गुण सत्व, रजस् और तमस् है। ये तीनों अनन्त हैं। चेतन ब्रह्म सर्वत्र व्याप्त है। उसका संकल्प एक देश में नहीं हो सकता। ब्रह्म का सष्टि रचना का संकल्प ब्रह्म मात्र में है। उसके संकल्प का विषय उतना उपादान तत्व (प्रकति) है जितने की सष्टि रचना के लिए अपेक्षा होती है। त्रिगुात्मक प्रकति में से कितना उपादान तत्व जगत् के रूप में परिणत हुआ इसका आकलन (हिसाब लगाना) मनुष्य के लिए संभव नहीं है। इस विषय में उपनिषदों में इतना ही बताया है कि कार्यरूप में परिणत हो जाने पर भी उपादान तत्व बना रहता है। कठ उपनिषद् (१.३.११) में कहा है–

"महतः परमव्यक्तमव्यक्तात् पुरुषः परः।।"

महत् से पर अव्यक्त है और अव्यक्त से पर पुरूष है। महत् कार्य है, अव्यक्त प्रकति है। महत् कार्य की सत्ता महत् से पर प्रकति की विद्यमानता को बताकर यह स्पष्ट किया है कि कार्य की परिणति हो जाने पर भी प्रकति का अस्तित्व रहता है। यदि पूरी प्रकति कार्यरूप में परिणत हो गयी होती तो कार्यरूप मध्यादि के अस्तित्व में उससे पर बताकर अव्यक्त प्रकति का संकेत न किया होता।

जहाँ तक ब्रह्म के निरवय होने का सम्बन्ध, ब्रह्म तो सदा ही निरवय है।

– **शेष पष्ठ ६ पर**

Question & Answer

Invitiation of Gayatri Mantra

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q. : What is the difference between "MANTRA" and "PRAYER"? Is it necessary that all mantras have some meaning, or it may not have any meaning to create power in mantra in inarticulate or into notional sound. **Vikas L. Acharya**

Ans. : The true prayer is in Ved mantras or you can say that ved mantras contain prayers. So prayers are of two types- Man-made and God-made. All mantras have meanings. There is no Ved mantra which is meaningless.

Q.: Is Gayatri Mantra also known as "Guru Mantra" and "Savitri Mantra"? **Vikas L. Acharya**

Ans.: Gayatri mantra is to be listened from an Acharya while taking Deeksha and therefore, may be considered as a Guru mantra.

Q. : Is it correct that language of Vedas is in old Sanskrit, which is different from modern literary Sanskrit? Also the language compactness makes Vedas almost cryptic and hard to clarify the actual meaning of mantras without knowing real Sanskrit language in its true sense.

Vikas L. Acharya

Ans. : Not in old Sanskrit but in eternal/divine Sanskrit being direct from God. Real Sanskrit language is not necessary to be known but it is important that Vedas are to be listened first from a learned Acharya who will guide further.

Q. : Is initiation to the gayatri mantra very important in realising its benefits? When I was 13 years old my thread ceremony took place and I was initiated to the gayatri mantra but I did not recite it for many years. Now I am 21. Is it right to start chanting the gayatri mantra straightaway or do I need to get initiated again? **Swarnadeep Bandyopadhyay**

Ans.: Yes, Gayatri mantra is must. It is your fault not to recite Gayatri mantra otherwise you could have gained several benefits in the life, now you can start reciting immediately. Yes, if possible, you must listen the

वाल्मीकि रामायणे जीवनदर्शनम्

गत अंकेन क्रमेषुः-

स्त्रीपुंसयोरेतादशं दाम्पत्यप्रेम एव जीवनस्य रसायनम्। यस्मिन् परिवारे समाजे वा सीतारामवत् पावन प्रणयसूत्रबद्धाः शुद्धाः पूताश्च दम्पतयः स्वं स्वं व्रतं पालयन्ति तत्रैव सुखम्, तत्रैव शान्तिः, तत्रैव च कल्याणमित्यस्ति रामायणस्य समतमयः सन्देशः।

जीवनस्य विविधक्षेत्रेषु समन्वय मपेक्षते रामायणाकविः। तद्यथा जीवने कदाचित् एतादशा आदर्शस्तु पुरुषार्थ एव। दैवपुराथार्थयोरेष समन्वयः रामलक्ष्मणयोः संवादे ऋषिणा रमणीयतया प्रदर्शितः। वनवासवत्तेन खिन्नं रोषावेषसंयुतं लक्ष्मणं सान्त्वयन् भाग्यमेव च स्वप्रवासकारणं प्रतिपादयन् रामो ब्रवीति –

कतान्तस्त्वेव सौमित्रे द्रष्टव्यो मत्प्रवासने।
राज्यस्य व वितीर्णस्य पुनरेव निवर्तने। *२/१०/४*
कश्च दैवेन सौमित्रे यूद्धुमुत्सहते पुमान्। *२/२०/६*

सुखदःखादीनां प्राप्तिरपि दैवाधीनां – इत्यस्ति रामस्यानुभूति :–

एषा यथार्थता जीवतने साक्षात्क्रियते जनैः। अतो भाग्यस्य प्राधान्यमेव प्रतिभाति आपाततः। किन्तु "आदर्शरूपेण नैवांगीकरणीय :– एष सिद्धान्तः" – इति सुस्पष्टं प्रमाणीकरोति कविः लक्ष्मणमुखेन। रामस्य शौर्य स्मारयन् दैवं च निन्दयन् लक्ष्मणो। भाणति–

विक्लवो वीर्यहीनों यः स दैवमनुवर्तते।
वीराः समीवितात्मानों न दैवं पर्युपासते।।
दैवं पुरुषकारेण यः समर्थः प्रबाधितुम्।
न दैवेन विपन्नार्थः पुरुषः सोवसीदति।। *२/२०/१३–१४*

इत्थं मानवजीवने दैव पुरुषाकारयोरा दर्शयथार्थयोश्च सुन्दरः समन्वय एव रामयणस्य जीवनदर्शनम्।

– क्रमशः

सरल सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन की १२५ वीं वर्षगांठ पर आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर लगभग सभी वक्ताओं ने कहा कि प्रत्येक भारतीय को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमने वैदिक विद्वान श्री सत्यकाम वर्मा जी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश सन्देश से जो अत्यन्त सरल भाषा में लिखी गई है एक-एक समुल्लास आर्य संदेश में प्रकाशित करने का

Gayatri mantra from a learned Acharya.

Q.: I have a son "Om" who is now 4 years old. I would like him to study modern education, yet learn and respect the traditional Vedas. When should this education start for him, and what is a good way to have him learn this? **Meera Agrawal**

Ans.: First of all you must please perform havan from Ved mantras daily. In this connection I have written a book in Hindi named- Yajya Karma- Sarvashreshth Ishwar Pooja which is worth Rs. 60/- excluding postal charges. The book contains several Ved mantras with detailed explanation in Hindi, which will be beneficial for all concerned. This will make pious effect on your son too. Then you may admit him in any school for education. I have written books on Vedas also which must be first learnt by you and your husband and then from the age of six years by your son, you may brief him the Vedas' Philosophy also.

To be continued...

वेद–वाणी

साधना चैनल

हर रविवार सायं 6.55 बजे

रविवार 24 फरवरी, 2008

–: प्रवचन :–

आचार्य अखिलेश्वर जी

–: प्रसारण-सहयोगी :–

आर्यसमाज कीर्ति नगर

नई दिल्ली–110015 **एवं**

श्री धर्मपाल आर्य एवं परिवार

सुशील जनरल स्टोर

आर. जेड़ – ई– 140, निहाल विहार,

नई दिल्ली–110041

आर्यसमाज ग्रीन पार्क, नई दिल्ली में

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

रविवार २ मार्च, २००८

प्रातः ६ बजे से दोपहर १ बजे तक

यज्ञ : प्रातः ६.०० से ६.४५ बजे

ब्रह्मा : आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय

संयोजक : श्री विद्यामित्र ठुकराल

अध्यक्षता : स्वामी प्रणवानन्द जी

ध्वजारोहरण : स्वामी प्रणवानन्द जी

भजनोपदेश :श्री आशाराम आर्य

प्रवचन : आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय

डॉ० महेश विद्यालंकार

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारकर पुण्यलाभ अर्जित करें एवं महर्षि के श्रीचरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें।

–गुरुदत्त तिवारी, प्रधान

कर्मचन्द नन्दवानी, मन्त्री

निश्चय किया है। आशा है इसे पढ़कर प्रत्येक भारतीय प्रेरणा लेगा और अन्यों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि वे एक-एक समुल्लास के प्रकाशन पर पत्रक के माध्यम से इसका प्रचार-प्रसार करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश घर-घर में जाए और इसकी सुगन्धि चहुं ओर फैले। - सम्पादक

नवम् समुल्लास : विद्या-अविद्या बन्ध और मोक्ष

अविद्या नाम है कर्मोपासना का, जिससे मत्यु (दुःख) को तरा जा सकता है यदि वे पवित्र हों, और विद्या कहते हैं यथार्थ के ज्ञान को, जिससे मोक्ष पाया जाता है। योगदर्शन के अनुसार 'अनित्यः अशुचि, दुःखमय और आत्मारहित तत्वों में नित्यता, शुचिता, सुखयमता और आत्मावत् व्यवहार करना अविद्या है। 'जब जीव इस अविद्या या अज्ञान में फंसा रहता है, और इसीलिए अधर्म पर चलता है, उसे मोक्ष या मुक्ति प्राप्त नहीं होती।

बन्ध और मोक्ष स्वभाव से न होकर निमित्त से ही होते हैं। जीव का स्वरूप अल्प होने से वह आवरण में आता, जन्म लेता, कर्मों के फलभोग रूप बन्धन में पड़ता, उससे छूटने का साधन करता, एवं परमानन्द परमात्मा को पाने का यत्न करता है। उसे पाकर ही वह मुक्त होता है। जीव ब्रह्म सदा पथक–पथक् हैं। जो सर्वव्यापक ब्रह्म हैं, वह परिच्छिन्न नहीं, अज्ञान और बन्धन में भी कभी नहीं आता, ये धर्म जीव के हैं, एकदेशी अज्ञानमय और परिच्छन्न होता है।

दुःखों से छूट जाने को 'मुक्ति' कहते हैं। परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म अविद्या कुसंग कुसंस्कार आदि से अलग रहने, सत्य–विद्यादि में बुद्धि रखने, परमेश्वर की प्रार्थनोपासनादि करने, योगाभ्यास, अध्ययन, एवं धर्मपूर्वक पुरूषार्थ आदि करने से मुक्ति होती है, इनसे विपरीत करने से बन्ध!

मुक्त होकर जीव ब्रह्म में रहता है और ब्रह्म के सर्वव्यापक होने से बिना रूकावट विज्ञान और आनन्दपूर्वक सब जगह विचरण कर सकता है। मुक्तावस्था में संकल्प-सत्यादि-स्वाभाविक गुण उसमें बने रहते हैं। वह जिस बात की भी इच्छा करता हैं, संकल्पमात्र से ही उसे भोग लेता है। जीव की ऐसी शक्तियां, बल, पराक्रम आकर्षण, प्रेरणा, गति, विवेचन, क्रिया आदि के रूप में चौबीस गिनाई गई हैं, जिनसे ही मुक्त होकर भी वह आनन्द की प्राप्ति और भोग को करने में समर्थ होता है। अतः मुक्ति का अर्थ जीव का विनाश या ब्रह्म बन जाना नहीं, दुःखों से छूट कर आनन्दस्वरूप सर्वव्यापक अनन्त परमेश्वर में रहकर आनन्द भोगना है।

–: क्रमशः :–

साभार : सत्यार्थ प्रकाश सन्देश

गुरु और उसका महत्व

– महात्मा चैतन्य मुनि

क्रियायोग का अन्तिम चरण है – 'ईश्वर–प्राणिधान'। मुख्य रूप से इसका भाव है मन, वचन और कर्म से परमात्मा के प्रति समर्पित रहना। ऋषि–मुनियों के ग्रन्थों का स्वाध्याय न करने के कारण आज व्यक्ति अनेक प्रकार के पाखण्डों में फंस गया है। समर्पण भी आज परमात्मा के प्रति नहीं बल्कि मनुष्यों के प्रति हो रहा है। आज प्रतिदिन पैदा होने वाले तथाकथित गुरुओं ने पाखण्ड का ऐसा जाल फैला रखा है कि व्यक्ति को परमात्मा से बहुत दूर ले जाकर भटका दिया है। ये गुरु सर्वप्रथम व्यक्ति को प्राचीन ऋषि–मुनियों के ग्रन्थों के स्वाध्याय से उपराम कर देते हैं और फिर जीभर कर अपने पाखण्ड को फैलाते है। वेदादि सत्य शास्त्रों के अध्ययन के अभाव में आजकल के अधिकतम गुरु स्वयं तो अज्ञानी है ही मगर अपने शिष्यों को भी उसी अज्ञानता के गर्त में युगों–युगों तक भटकने के लिए छोड़ देते हैं। हमारा यह मानना है कि जो गुरु अपने चेलों को प्राचीनतम वैदिक तथा महर्षियों की परम्पराओं से हटाकर नया मत चलाता है, नयी उपासना पद्धति तथा गुरुमंत्र देता है वह निश्चित रूप से पाखण्डी है। हमारा इतिहास बताता है कि योगेश्वर श्री कष्ण महाराज तक किसी भी नई परम्परा को प्रश्रय नहीं मिला। वे सभी योगी तथा ऋषि–मुनि ने अपनी कोई भी नई परम्परा नहीं चलाई है, बल्कि वे कुछ बात जिज्ञासुओं से कहते भी थे तो साथ ही यह बात भी कह देते थे कि ऐसा हमने अपने से पूर्व आचार्यों से सुना है...... कितनी विनम्रता थी उन लोगों में.......मगर आज यदि कोई गुरुमंत्र देता है तो साथ ही कह देता है कि यह किसी और को न बताना नहीं तो इसका असर कम हो जायेगा। यह तक भी कह दिया जाता है कि गुरु की निन्दा नहीं सुननी है अन्यथा इससे बहुत बड़ा पाप लगेगा। इस प्रकार ये लोग पूरीतरह से व्यक्ति के स्वतंत्र चिन्तन को कुण्ठित कर देते हैं तथा अपना गुलाम बना देते हैं। उस बेचारे चेले की प्रगति ही रूक जाती है क्योंकि अब वह किसी के पास भी ज्ञान प्राप्त करने के लिए नहीं जायेगा और न ही गुरु की निन्दा सुनेगा.....न ही किसी प्रकार का तर्क करेगा.....गुरु इस प्रकार का प्रतिबन्ध या भय इसलिए दे देते है ताकि उनके अज्ञान की पोल न खुल जाए...... या वह व्यक्ति किसी और यदि दूसरे को मंत्र बता दिया तो गुरु की अपनी महता कम हो जायेगी। यह गुरुओं का भी गुरु और जिसका नाश कभी नहीं होता, इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'गुरु' है। इस सूत्र का भाष्य करते हुए महर्षि व्यास जी लिखते हैं– पूर्वे ही गुरवः कालेनावच्छिद्यन्ते। यत्रावच्छेदार्थेन कालो नोपावर्तते स एष पूर्वेषामपि गुरुः। यथास्य सर्गस्यादौ प्रकर्षगत्या सिद्धस्तथाति कान्तसर्गादिष्वपि प्रत्येतव्यः। हमारे पूर्ववर्ती गुरु तो काल से अविच्छिन्न–सीमित होने से नष्ट हो जाते हैं। जिस ईश्वर में अवच्छेदार्थक नाश का हेतु काल उपस्थित नहीं होता, वह यह ईश्वर पूर्वज ऋषि-महर्षियों का भी (अग्नि आदि का भी) गुरुः ज्ञान धर्म का उपदेष्टा है। जैसे इस सष्टि के आदि में प्रकर्षगतया–प्रकष्ट ज्ञानादि के कारण सिद्ध है, वैसे पिछली सष्टियों के आदि में भी जानना चाहिए। 'महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश समुल्लास में लिखते हैं–' जैसे वर्तमान समय में हम लोग अध्यापकों से पढ़ानेहारा है। क्योंकि जैसे जीव सुषुप्ति और प्रलय में ज्ञानरहित हो जाते हैं, वैसा परमेश्वर नहीं होता। उसका ज्ञान नित्य है। इसलिए यह निश्चित जानना चाहिए कि बिना निमित्त से नैमित्तिक अर्थ सिद्ध कभी नहीं होता। परमात्मा को ही परम गुरु मानने के बारे में वे ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में लिखते हैं–. ....जो कि प्राचीन अग्नि, वायु आदित्य, अंगिरा और ब्रह्मादि पुरुष सष्टि की आदि में उत्पन्न हुए थे, उनसे लेके हम लोग पर्यन्त और हमसे आगे जो होने वाले है, इन इसका गुरु परमेश्वर ही है, क्योंकि वेद द्वारा सत्य अर्थों का उपदेश करने से परमेश्वर का नाम गुरु है। इसलिए जहां तक ईश्वरप्रणिधान के अन्तर्गत समर्पण की बात है, यह समर्पण उस परमगुरु परमात्मा के ही प्रति होना न की किसी व्यक्ति के प्रति। इस सम्बन्ध में बहुत साफ कहा गया है– ईश्वरप्रणिधानं सर्वकियाणां परम गुरावर्पणं तत्फलसंन्यासों वा।। (यो०द०२–१) अर्थात् सब क्रियाओं का परमगुरु परमात्मा में अर्पण तथा उसके फल की इच्छा न करना ईश्वरप्रणिधान कहलाता है। इस सूत्र के बारे में महर्षि दयानन्द जी ने भी स्पष्ट किया है'.........सब सामर्थ्य, सब गुण,प्राण, आत्मा और मन के प्रेमभाव से आत्मादि द्रव्यों का ईश्वर के लिए समर्पण करना।

– वैदिक वशिष्ठ आश्रम,
गांव चौक (धनोटु), महादेव,
तहसील-सुन्दरनगर, मंडी (हि.प्र.)

एक स्वर से वैदिक मान्यताओं को सत्य मानकर एक ही गायत्री महामंत्र तथा परमात्मा के नाम ओ३म् का जाप करने की प्रेरणा देते रहे हैं। आज तो हजारों ही नए–नए मन्त्रादि देने वाले तथाकथित गुरु पैदा हो गए हैं। दीक्षा देने के नाम पर भी बहुत पाखण्ड और आडम्बर किया जाता है तथा अकल के अन्धे और गांठ के पूरे लोगों से मनमानी धनराशि प्राप्त करते हैं। मानों आज यह एक अच्छा–खासा व्यापार ही हो गया है। हमने देखा है कि कुछ तथाकथित गुरु कार्यक्रम देने के लिए एक निश्चित राशि की मांग करते हैं और यदि जनता से अधिक पैसा एकत्रित हो जाए तो वह आयोजकों को दे दिया जाता है। इससे ये गुरु भी प्रसन्न हो जाते हैं और आयोजकों के भी वारे–न्यारे हो जाते है। कई स्थानों पर तो देखा गया है कि गुरु महाराज के प्रवचन के बाद दीक्षा देने के लिए गुरु के एजैण्टों द्वारा लोगों को ऐसे पकड़–पकड़ कर लाया जाता है जैसे बड़ी–बड़ी दुकानों के नौकर ग्राहकों को पकड़कर लाते हैं।

हमने देखा कि प्रत्येक नए मत का गुरु अपने शिष्यों को नया ही मंत्र देता है क्योंकि यदि पुराना दे दिया जाए तो उनकी दाल कैसे गलेगी। जैसा कि हमने पहले कहा उपनिषदों आदि के ब्रह्मदेवता ऋषियों भी एक आश्चर्य की बात है कि गुरु उस पर ही कपा करता है जो उसका विधिवत् चेला बन जाए, बाकियों पर वह कपा क्यों नहीं करता है.......? उन तथाकथित गुरुओं से पूछा जाना चाहिए कि वे ऐसा मंत्र देते ही क्यों है जो इतना कमजोर है कि किसी को बताने मात्र से ही उसकी शक्ति समाप्त हो जाए।

वास्तविकता यह है कि ये तथाकथित गुरु अपने चेलों को मूर्ख बनाते हैं तथा अज्ञानी लोग मूर्ख बन भी जाते हैं। अपनी बात सत्य सिद्ध करने के लिए इनके पास न तो कोई आधार ही है, न कोई लौजिक और न ही कोई तर्क। बस जो गुरु की अकपा का पात्र बता दिया जाता है। ये लोग व्यक्ति की बुद्धि को तो एकदम कुन्द करके ही रख देते है। महर्षि दयानन्द जी ने कहा कि ऐसे तथाकथित गुरु सर्वप्रथम सत्य का खण्डन करते हैं क्योंकि जो ऐसा न करें तो उनका असत्य कभी नहीं चल सकता है।

गुरु शब्द की व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश के पहले ही समुल्लास में लिखते है' ग शब्द) इस धातु से गुरु शब्द बना है। 'यो धर्म्यान् शब्दान् गणात्युपदिशति स गुरुः' 'स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनान वच्छेदात्' योग०। जो सत्यधर्म प्रतिपादक, सकल विद्यायुक्त वेदों का उपदेश करता, सष्टि की आदि में अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा और ब्रह्मादि

आर्यसन्देश - चतुर्थ अंक : नारी संसार

भारत का गौरव - सुनीता विलियम्स

भारतीय (गुजराती) पिता श्री दीपक पांड्या व स्लोवेनियन माता श्रीमती बौनी पांड्या की मेधावी साहसी पुत्री श्रीमती सुनीता विलियम्स अमरीकी श्री माइकेल जे. विलियम की पत्नी हैं। वह ४१ वर्ष की हैं और अभी तक उनकी कोई सन्तान नहीं है। किन्तु उनके पास एक प्यारा सा जैक रसल टेरियर जाति का गोर्बी नामक कुत्ता है। वह नीधाम, फालमाउथ-मेसाचुसेट्स को अपना पैत्रिक धाम मानती हैं। उनकी जन्मतिथि १६ सितम्बर १६६५ है। उन्हें भारतीय पर्वों को मनाने के साथ–साथ भारतीय व्यंजन भी पसन्द हैं। यह बात इस तथ्य से स्थापित हो जाती है कि जब उन्होंने इण्टरनेशनल स्पेश स्टेशन (आई.एस.एस.) के लिए दिसम्बर, २००६ में नासा (अमेरिका) से प्रस्थान किया तो अन्य अनेक वस्तुओं, उपकरणों, खाद्य–पदार्थों के साथ–साथ वह अपने साथ श्रीमदभागवतगीता की एक प्रति, गणपति गणेश की एक प्रतिमा और कुछ समोसे भी ले गयी। भारतीय संतों की वाणी सुनना प्रसन्द है।

इस वीरांगना का चयन जून, १६६८ को नासा द्वारा किया गया था। एक लम्बी और सघन प्रशिक्षण–अवधि के पश्चात उन्हें शटल व आई.एस.एस. प्रणाली का गहन अध्ययन कराया गया, शारीरिक व मानसिक व्यायाम कराये गये, जल में व निर्जन स्थानों में रहते हुए कैसे स्वयं को जीवित रखा जाए–ऐसा प्रशिक्षण दिया गया, विभिन्न वैज्ञानिक व तकनीकी महीनताएँ समझाई गयी, स्थान–स्थान की यात्राएं कराई गयी, अन्तरिक्ष–विज्ञान से जुड़े अनेक वैज्ञानिकों द्वारा अन्तरिक्ष यात्रा के लिए उनका मार्गप्रशस्तिकरण किया गया। इस प्रकार के अनेकानेक दुर्गम, कठिन, दुर्घर्ष व साहस भरे कार्यक्रमों व प्रशिक्षण के उपरान्त उन्हें अन्तरिक्ष–यात्रा के योग्य पाया गया। उन्हें आई.एस.एस. इंजीनियर बना दिया गया। उनकी इस उपलब्धि पर भारत को, अमरीका को व विश्व को समान गर्व है। और फिर १० दिसम्बर, २००६ के ऐतिहासिक दिवस को 'सुनी' ने (प्यार से उनके माता–पिता) उन्हें सुनी कहकर ही पुकारते हैं) टी–३७ फ्लाइट द्वारा स्पेस शटल में प्रवेश करके अपनी अन्तरिक्ष–यात्रा के लिए प्रस्थान किया।

१६ जून, २००७ शनिवार को सुनी ने अब तक की सबसे बड़ी अव्याहत अन्तरिक्ष उड़ान का, किसी महिला द्वारा बना गया, नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया। उन्होंने १६६६ में रशियन मीर स्पेश मिथुन में बनाया गया सुश्री शैनॉन लुसिड द्वारा स्थापित

— शेष पष्ठ ६ पर

पृष्ठ ३ का शेष

उपनिषद् शब्दप्राण से उसे निष्कल और निरवय नहीं होती, यदि यह मान भी लें कि सारी प्रकति जगत के रूप में परिणत नहीं होती, उसका कुछ अंश मूलरूप में बना रहता है। इसप्रकार प्रकति का विभाजन हो जाने से ब्रह्म का विभाजन नहीं होता। ब्रह्म के सूक्ष्म होने के कारण वह प्रकति का अव्यक्त मूल रूप हो या व्यक्त स्थूल रूप दोनों में ही व्यापक है, जैसे लोक में घड़े का आकाश, मकान के भीतर का आकाश आदि शब्दों का व्यवहार होता है, इससे आकाश के टुकड़े नहीं हो जाते। वह हमेशा एकरूप रहता है। इसी प्रकार प्रकति के दो भागों में बँट जायेपर भी ब्रह्म की व्यापकता में कोई अंतर नहीं पड़ता। ऐसा भी नहीं है कि मूल प्रकति में एक ब्रह्म व्यापक हो और जगत के रूप में परिणत प्रकति में कोई और ब्रह्म हो। ब्रह्म का तो जो स्वरूप है वह वैसा ही रहता है। ब्रह्म के सावयव होने की कल्पना मूर्खता पूर्ण है। क्योंकि शब्द प्रमाण। ब्रह्म को निष्फल, निरवय करता है। इसके अतिरिक्त वेद और वैदिक साहित्य ब्रह्म को जगत् का कर्ता, नियन्ता और अधिष्ठाता बताते हैं। वह स्वयं जड़ जगत् में परिणत होने वाला उपादान तत्व नहीं है। ऋग्वेद (१०.१२६.७) में कहर है—'' यो अस्याध्यश्तः परमेव्योमन्'' जो सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी ब्रह्म इस विश्व का अध्ययन और नियन्ता है और यजुर्वेद(४०.८) में कहा है—'' याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।'' सदा रहने वाले उपादान तत्वों से इस परब्रह्म ने विधिपूर्वक संपूर्ण संसार की रचना की। इन प्रमाणों से जगत की रचना करने वाला परब्रह्म निमित्त कारण सिद्ध होता है। ऐतरेय। उपनिषद् में कहा है कि—

सईक्षत लोकान्नसृजा इति। सइयांल्लोकानसजत।।'' (१.१.२)

इसने ईक्षण (संकल्प) किया, मैं लोकों को बनाऊँ, उसने इन लोकों को बनाया स्पष्ट है कि वह स्वयं लोकों के रूप में परिणत नहीं हुआ। इससे सिद्ध होता है कि ब्रह्म जगत का निमित्त कारण है।

— अपने कथन की पुष्टि में सूत्रकार आचार्य एक और हेतु अगले सूत्र में प्रस्तुत करते हैं।

— सी-२ए/६० जनकपुरी, नई दिल्ली-५८

प्रथम पृष्ठ का शेष

जाए,जिससे युवा वर्ग को स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के कार्यों, उनके जीवन तथा मुख्य वैदिक सिद्धान्तों की संक्षिप्त जानकारी हो पाए और यदि वे युवा यह साहित्य पढ़ लें तो कम से कम उनमें महर्षि दयानन्द के जीवन को समझने तथा पढ़ने की इच्छा उत्पन्न हो जाए।

श्री राजेन्द्र कुमार (एम.डी.एच.) ने इस सम्बन्ध में सुझाव दिया कि ऐसी वैबसाईटों का निर्माण कराया जाए जिससे युवा वर्ग वे प्रश्नोत्तरी माध्यम से स्वामी दयानन्द एवं वैदिक साहित्य के विषय में जान सकें। उन वैबसाईट्स की जानकारी सभी प्रकाशित साहित्य पर हो। इसी प्रकार से ऐसी अन्य योजनाएं भी बनाई जाए जिससे की हम अधिक से अधिक लोगों तक महर्षि दयानन्द जी के चित्र तथा उनकी शिक्षाओं को पहुंचाने में सफल हो सकें। इस पूरे प्रोजेक्ट में युवाओं तथा बच्चों तक पहुंचने के लिए विशेष योजना बनाऐ जाने पर भी विस्तत चर्चा हुई।

इस पूरे प्रोजेक्ट का प्रतीक चिह्न (लोगो) तैयार कराया जा रहा है। इस लोगो को होली के पावन पर्व पर आयोजित आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह के अवसर पर सार्वजनिक रूप से इस समिति के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी द्वारा जारी किया जाएगा।

कुछ सदस्यों ने महाशय जी से निवेदन किया कि काफी वर्ष पूर्व स्वामी दयानन्द जी की जीवनी एमडीएच के प्रायोजकत्व में रेड़ियो पर प्रसारित की जाती थी, उसी जीवनी को या उसके सशोधित रूप को एफएम रेडियो या अन्य माध्यमों द्वारा प्रसारित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। इस पर महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि यह विचार बहुत अच्छा है इस पर निश्चित रूप से हमें कार्य करना चाहिए। बैठक में यह भी निर्णय हुआ कि स्वामी दयानन्द जी के एक ही चित्र को इस अवसर पर प्रचारित प्रसारित किया जाए जो कि सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकत करा लिया जाए। इस कार्य में आर्यसमाज के प्रत्येक अंग को भागीदारी दी जावे।

विचारोपरान्त निर्णय लिया गया कि इस पूरे कार्यक्रम की योजना लिखित में तैयार कर ली जावे तथा उसके साथ–साथ संगठन में ऊपर से नीचे तक, प्रत्येक स्तर पर उसके क्रियान्वयन की जिम्मेदारी भी तय कर दी जाए तथा एक विस्तत बैठक आमन्त्रित करके इसे आगे क्रियान्वित करने हेतु कार्य आरम्भ कर दिया जाए।

बैठक में **श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, श्रीमती विमला मलिक जी एवं श्री वीरेन्द्र आर्य जी भी** उपस्थित थे। इस अवसर पर बैठक में उपस्थित समस्त महानुभावों का श्री धर्मपाल जी ने धन्यवाद किया। ❑

पृष्ठ ५ का शेष

भारत का गौरव.....

१८८ दिन ४ घण्टे का अन्तरिक्ष उड़ान का कीर्तिमान ध्वस्त कर दिया। यह कीर्तिमान बनते समय घड़ी में प्रातः के ११.१७ बजे थे।

अन्ततोगत्वा ६.१२ रात्रि, मंगलवार १६ जून, २००७ को एटलांटिस ने आई.एस.एस. को छोड़ा और सुनीता तथा उनके ६ साथियों (१) एटलांटिस कमाण्डर श्री रिक स्टरको, (२) पायलट श्री ली आर्कैंसबौल्ट, (३) मिशन विशेषज्ञ श्री पैट्रिक फौरैस्टर (४) मिशन विशेषज्ञ श्री जेम्स रैली (५) मिशन विशेषा श्री स्टीपन स्पैनसन तथा (६) मिशन विशेषज्ञ श्री डैनी ओलीवास को लेकर पथ्वी की ओर प्रस्थान किया। करोड़ों लोगों की शुभकामनाओं के सुरक्षा–कवच में सुनीता व उनके साथियों की गह वापसी की यात्रा आरम्भ हुई।

अन्ततोगत्वा शुक्रवार और शनिवार के मध्य की रात्रि को १.१६ ए.एम. पर यान को एडवर्ड्स एअर फोर्स बेस, कैलीफोर्निया पर उतारा गया। सब कुछ सुरक्षित था– असंख्य आंखें खुशी से आंसू बहाने लगीं। आतिशबाजी, नाच–गाना–सब शुरू हो गया। अंतरिक्ष में रहने का १९५ दिन का कीर्तिमान स्थापित करके लौटी थी सुनीता।

सुनीता ने आई.एस.एस. प्रवास में अपने रोमांचकारी संस्मरण भी लिखे हैं, जो धीरे–धीरे हमारे सामने आते रहेंगे। अब सुनीता चन्द्रमा पर जाने का मन बना रही हैं। आज कल्पना चावला की आत्मा कितनी प्रसन्न हो रही होगी सुनीता के मिशन की सफल परिणति देखकर।

सुनीता– तुम जियो हजारो साल, साल के दिन हों पचास हजार......।

-: खेद व्यक्त :-

पाठकों को अत्यन्त खेद के साथ सूचित किया जाता है कि किन्हीं अपरिहार्य कारणों से साधना चैनल पर प्रसारित होने वाला वेदवाणी कार्यक्रम गति दो सप्ताहों से नहीं आ पा रहा। दर्शकों को हुए कष्ट के लिए खेद है।

– राजेन्द्र दुर्गा, संयोजक

कै० देवरत्न आर्य के निजी आवास के पते में संशोधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी के निजी आवास के पते में निम्न प्रकार संशोधन करते हुए आर्यजन निम्न समयानुसार उनके पतों पर पत्रव्यवहार के लिए उपयोग करें :–

होली से दिपावली तक

"वैदिक विहार"
२८ बसन्त विहार कालोनी,
धोलाभाटा, अजमेर - ३०५००८ (राज०)
दूरभाष : ०१४५-२६६३४५६

दीपावली से होली तक

एफ-६१४, मिल्टन अपार्टमैंट्स,
जुहूतारा, आजाद रोड,
मुम्बई- ४०००४९
दूरभाष : ०२२-२६६१२३४१

आर्यसमाज,घाटकोपर (प०) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

''आर्यसमाज घाटकोपर का ३० वां वार्षिकोत्सव एवं द्वितीय आर्य पुरोहित पुरस्कार'' दिनांक २९,३०,३१ दिसम्बर २००७ को मुम्बई प्रदेश आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित श्री वी.एस. गुरूकुल टेक्नीकल हाईस्कूल, तिलक रोड, घाटकोटर के मैदान में बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया।

उत्सव का प्रारम्भ ''विश्वशान्ति कल्याण हेतु'' ग्यारह कुण्डीय चतुर्वेदीय महायज्ञ'' से किया गया। इस महायज्ञ के ब्रह्मा श्री आचार्य सोमवीर शर्माजी के ब्रह्मत्व में यज्ञ कार्य सम्पन्न हुआ। इस महोत्सव में सर्वश्री तपोनिष्ठ श्री स्वामी धर्मबन्धु जी (संस्थापकः– श्री. वैदिक मिशन ट्रस्ट प्रांस्ला–राजकोट, गुजरात) व वैदिक विद्वान श्री पं. कमलेश कुमार आर्य'' अग्निहोत्रीजी'' को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। जिसमें स्वतंत्र व्याख्यानों के द्वारा वेद राष्ट्र–रक्षा, युवा, नारी, शिक्षा, वैदिक धर्म, यज्ञ एवं संस्कार आदि विभिन्न विषयों पर प्रवचन किया गया।

इस महोत्सव का विशेष आकर्षण ''घाटकोपर आर्यवीर दल'' बच्चों के द्वारा प्रस्तुत'' शक्ति प्रदर्शन'' को व्यायाम के रूप में प्रदर्शित किया गया। इस द्वितीय दिवस प्रातः कालीन सत्र में'' द्वितीय आर्य पुरोहित पुरस्कार'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह अभिनन्दन पत्र व स्मति चिन्ह भेंट स्वरूप दिया गया। यह पुरस्कार श्री. प्रेमजी वेलाणी की ओर से दिया गया।

द्वितीय दिवस के सत्र में सायंकाल को ''महिला सम्मेलन'' का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती जयाबेन रजनी कान्त पटेल ने की।

इस ''त्रिदिवसीय महोत्सव'' के अध्यक्ष पद के रूप में उपस्थित हुए श्री नारण मनजी वेलाणी (पूर्व प्रधान आर्य समाज–घाटकोपर)।

– महेश धनजी वेलाणी,
महामंत्री, आर्यसमाज घाटकोपर,
मुम्बई (महाराष्ट्र)

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – **सम्पादक**

सिद्धयोग पीठ, पिपली कुरुक्षेत्र के वार्षिकोत्सव पर

चतुर्वेद पारायण यज्ञ

१० मार्च से ६ अप्रैल, २००८

समय प्रतिदिन : प्रातः ६ से ६ बजे
सायं : ४ से ७ बजे

यज्ञब्रह्मा : आचार्य हरिप्रसाद

यज्ञ पूर्णाहुति : ६ अप्रैल, ०८

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में परिवार एवं इष्टमित्रों सहित पहुंचकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

– स्वामी सम्पूर्णानन्द

आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य की महमन्त्रणी

श्रीमती शशि प्रभा आर्या का अभिनन्दन

दिल्ली १३, जनवरी माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट सरस्वती विहार दिल्ली के तत्वाधान में वैदिक संस्कति का अनुपम सन्देश स्थान–स्थान पर पहुंचाने, आर्य समाज के प्रति निष्ठा, विश्वशान्ति एवं मानव कल्याण के क्षेत्र में अभिनन्दनीययोगदान के लिए श्रीमती शशि प्रभा आर्या, महमन्त्रणी आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य का भव्य अभिनन्दन आर्य समाज सरस्वती विहार के विशाल सभागार में विशाल जनसमूह की उपस्थिति में किया गया। ट्रस्टी के ट्रस्टी श्री अरूण आर्य एवं क्षेत्रीय निगम पार्षद श्रीमती ऊषा गुप्ता ने श्रीमती शशि प्रभा आर्या को शाल, स्मति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर 'यज्ञ–श्री' सम्मान से विभूषित किया।

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री भजन प्रकाश आर्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि श्रीमती शशि प्रभा आर्या अपने आप में एक आर्य संस्था है जो हर समय वेद प्रचार के कार्यों में व्यस्त रहती है।

इस अवसर पर चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी २३० बच्चों के सुन्दर साहित्य ट्रस्ट की ओर से बांटा गया तथा बिजली ३६ बच्चों को सुन्दर साहित्य एवं पुरस्कारों से श्रीमती शशि प्रभा आर्या एवं श्रीमती ऊषा गुप्ता ने पुरस्कत किया और अपना आशीर्वाद दिया।

माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट की ओर से श्री अरूण आर्य ने डॉ० वी०के० खेड़ा को उनकी मानव कल्याण की सेवाओं के फलस्वरूप सम्मानित किया।

सभी आगन्तुकों ने माता कमला आर्य स्मारक ट्रस्ट के अधिकारियों को समाज सेवा के लिए बधाई दी। श्री अरूण आर्य, श्रीमती ज्योति अरोड़ा एवं श्री हरीश बत्रा आदि महानुभावों के महत्वपूर्ण योगदान से यह विशाल कार्यक्रम उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। आर्य समाज सरस्वती विहार के प्रधान श्री कष्णदेव ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद किया।

अन्त में शान्ति पाठ के पश्चात प्रीतिभोज का आयोजन किया गया।

– ओम प्रकाश मनचन्दा
महामंत्री

शोक समाचार

श्री एन०डी० ग्रोवर नहीं रहे

सात फरवरी की प्रातः समाचार पत्रों में छपी यह खबर कि डीएवी कालेज प्रबन्धक समिति के उपाध्यक्ष एवं सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् ८४ वर्षीय एनडीग्रोवर का मंगलवार की देर रात्रि पीजीआई, चण्डीगढ़ में निधन हो गया, मुझे ३० वर्ष पूर्व की उनसे जुड़ी कुछ स्मतियां की ओर बरबस खींच ले गया। दयानन्द कालेज, हिसार से मैंने स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त की और २६ मार्च, १९७८ को मुझे कालेज के दीक्षांत समारोह में प्रिंसिपल श्री एनडी ग्रोवर के कर-कमलों से स्नातक डिग्री लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

श्री ग्रोवर रसायन शास्त्र के प्राध्यापक होने के साथ–साथ, जीवन के प्रति सकारात्मक सोच एवं दयानन्द सरस्वती जी के दिखाए हुए मार्ग पर चलने वाले एक अनथक कर्मयोगी थे।

मैंने हिसार शहर में उन्हें एक पुराने से साइकिल पर बड़े–बड़े समारोहों में शामिल होते हुए देखा है। उनके इस सादेपन से न केवल मैं बल्कि हिसार इलाके के बड़े–बड़े उद्योगपतियों का भी गर्व से मस्तक ऊंचा, इसलिए हो जाता था कि एक कर्मठ, साधारण से दिखने वाले व्यक्ति जीवन में से भी झुग्गी–झोपड़ी में रहने वाले को साथ सुधरा रहने और उन्हें शिक्षा के मार्ग पर ले जाने के लिए सदा लग्नशील रहे। प्रायः हर रविवार को श्री ग्रोवर हिसार के सर्वोदय भवन में महान स्वतंत्रता सेनानी दादा गणेशी लाल के मार्गदर्शन में आयोजित रविवारिय गोष्ठी में अवश्य शामिल होते थे और यदा–कदा अपने विचारों एवं प्रवचनों से उपस्थित जनों का मन मोह लिया करते थे। उनकी कर्मठता एवं लम्बे अनुभव के कारण डीएवी कालेज प्रबन्ध समिति ने उन्हें हिसार के पश्चात, बिहार, उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल, मध्य प्रदेश, झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ राज्यों में शिक्षा प्रचार के कार्यों को आगे बढ़ाने का दायित्व सौंपा और उन्होंने इन राज्यों में लगभग २०० डीएवी स्कूलों की स्थापना में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। वह एक महान शिक्षाविद् तो थे ही, देश की भावी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य के लिए सदा चिंतनशील रहते थे। उनके अचानक देहावसान से देश के युवाओं के सिर से एक ऐसा वहद्हस्त उठा गया है, जिसकी क्षतिपूर्ति होना असंभव है। ऐसे महान गुरू का शुभ आशिर्वाद हमें दिव्य–लोक से भी सदा

आर्यसमाज शादीपुर खामपुर, नई दिल्ली एवं
महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल का वार्षिकोत्सव

२३ एवं २४ फरवरी, २००८

सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

निवेदक : आर्य समाज कार्यकारिणी, एवं विद्यालय प्रबन्धक समिति

द्वारका क्षेत्र में आर्यसमाज की स्थापना के लिए बैठक

गत दिनों द्वारका में आर्यसमाज की स्थापना के उद्देश्य से उस क्षेत्र में रहने वाले समस्त आर्य महनुभावों को एकत्र करने के लिए तथा इस सम्बन्ध में आवश्यक चर्चा करने हेतु इस बैठक का आयोजन किया गया था। इस विषय में **अगली बैठक रविवार २४ फरवरी, २००८ को प्रातः ११ बजे यज्ञ के साथ आयोजित की गई है। बैठक श्री राजीव पुरी जी के निवास स्थान सी-१०६, प्रभा अपार्टमैंट, प्लाट नं. ११, सैक्टर- २३, द्वारका, नई दिल्ली-११००७५, मो०: 9810066177** पर रखी गई है।

हम सभी पाठकों से निवेदन करते हैं कि जिनके परिचित, जानकार, रिश्तेदार द्वारका क्षेत्र में रहते हों उनके नाम संयोजक को लिखवा दें तथा उन्हें इस बैठक के विषय में जानकारी अवश्य देवें तथा बैठक में सम्मिलित होने के लिए प्रेरणा प्रदान कर आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में योगदान दें।

*– **श्रीमती अंजू नागपाल (संयोजक) मो० : 9868881274***

पातजंल योगधाम आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार में
७३वाँ ध्यान योग शिविर एवं यजुर्वेद यज्ञ

६ अप्रैल रविवार से १२ अप्रैल, २००८ शनिवार

श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में ध्यान योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविरार्थियों को सम्पूर्ण शिविर में होने वाले कार्यक्रमों में भाग लेना अनिवार्य होगा। खांसी, श्वांसादि के रोगी एवं छोटे बच्चे वाली माताएं आने का कष्ट करें। शिविर में आयुर्वेद, प्राकतिक–चिकित्सा एवं योगासनों के माध्यम से भी उपचार किया जायेगा।

साधकों से निवेदन है कि रू० ५०/- देकर पंजीकरण कराके अपना स्थान सुरक्षित करें। (संन्यासियों के लिए पंजीकरण निःशुल्क)

के हाथों से ही उनकी भावी पीढ़ी का निर्माण हो रहा था और नई पीढ़ी भारतीय संस्कति एवं नैतिक मूल्यों से ओत–प्रोत हो रही थी। वे अपने व्यस्त प्राप्त होता रहेगा, ताकि आने वाली पीढ़ियां भी उनके जीवन से प्रेरणा लेती रहें।

– अरुण जौरह बिश्नोई, पंचकुला

भजनोपदेशक पं० सत्यपाल पथिक को पुत्रशोक

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदशेक, संगीताचार्य, भक्तिगीतों के माध्यम से आर्यजनों प्रेरणा देने वाले पं० सत्यपाल पथिक जी के सुपुत्र श्री संदीप आर्य जी की दिनांक १६ फरवरी, ०८ को अमतसर (पंजाब) में कुछ लोगों ने चाकू मारकर निर्मम हत्या कर दी। श्री संदीप आर्य के मत्यु के समाचार ने आर्यजगत् का आहत किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सभा प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य एवं अनेक आर्यवीर इस मौके पर श्री पथिक जी को सांत्वना देने के लिए अमतसर पहुंचे।

वरिष्ठ आर्य नेता श्रीराममुनि का का निधन

गत ४५ वर्षों से आर्यसमाज त्रिनगर नई दिल्ली से जुड़े श्री श्रीराम मुनि जी का १०२ वर्ष की आयु में २० फरवरी, ०८ को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से २१ फरवरी को किया गया। श्री मुनि जी आर्यसमाज त्रिनगर के ३० वर्षों तक प्रधान रहे, वर्तमान में वे आर्यसमाज के संरक्षक थे। उन्होंने आर्यसमाज में आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी खोल रखी थी। वे अपनी पीछे दो पुत्र एवं तीन सुपुत्रियों का भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। श्री मुनि जी ने अपने सम्पूर्ण परिवार को वैदिक संस्कारों से सिंचित किया। उनका छोटा सुपुत्र आर्यसमाज त्रिनगर के उपप्रधान के पद पर कार्य कर रहा है।

श्री मुनि जी की स्मति में श्रद्धांजलि सभा/रस्म पगड़ी उनके निवास स्थान १७१८/१२५, शान्तिनगर, त्रिनगर, दिल्ली में शुक्रवार २२ फरवरी, ०८ को सायं ४ बजे सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।– सम्पादक

साप्तहिक आर्य सन्देश

18 फरवरी, 2008 से 24 फरवरी, 2008

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी.एल. (एन.डी.) - ११/६०७१/२००६-२००८
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक २१/२२–०२–२००८
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३६/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

आर्य–परिवार होली मंगल मिलन समारोह

शुक्रवार २१ मार्च, ०८ सायं ३.३० से ७.१५ बजे

स्थान : रघुमल आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, राजाबाजार (स्टेट्स एम्पोरियम के पीछे), कनॉट प्लेस, नई दिल्ली

❖ नवसस्येष्टि यज्ञ : ३.३० बजे ❖ बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम ❖ भजन एवं हास्य रंग ❖ होली–मंगल मिलन एवं प्रीतिभोज : ७.१५ बजे

इस अवसर पर आपसे निवेदन है कि :- १.यह आर्यों के परिवारों के मिलन का पर्व है। अतएव आप अपने परिवार के छोटे से छोटे एवं बुजुर्गों सहित इस समारोह में सम्मिलित हाने का प्रयास करें। २. क्या आप किन्हीं ऐसे परिवारों के विषय में जानते हैं जिनकी पूर्व पीढ़ियों में आर्य समाज रचा बसा हो और अब वे किन्हीं कारणों से आर्य समाज के संगठन से सक्रिय सम्बन्ध न रख पाए हों ? कपया इस कार्यक्रम का उन्हें निमन्त्रण दें अथवा उनका नाम–पते के सम्बन्ध में सभा को सूचित करें जिससे सभा उनको इस समारोह में भाग लेने के लिए आमन्त्रित कर सकें। आप अपने नाम एवं पते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के ई-मेल aryasabha@yahoo.com पर भी भेज सकते हैं।

आर्यजन दिन एवं समय नोट कर लें तथा सपरिवार इष्ट मित्रों सहित हजारों की संख्या में पहुंचकर समारोह को सफल बनाएं।

निवेदक :- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा- १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

शोक समाचार

चलती-फिरती आर्यसमाज के नाम से प्रसिद्ध
श्री रोशनलाल गुप्त का निधन

रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर के प्रबन्धक, अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति के महामन्त्री एवं दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के पूर्व मन्त्री तथा लम्बे समय तक आर्यसमाज के कार्यों को गति देने वाले श्री रोशनलाल गुप्ता जी का १४ फरवरी को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन सायं ४.३० बजे

होने के लिए प्रेरित कर स्वयं भी भाग लिया। आर्यसमाज शताब्दी ट्रेन यात्रा में कर्मठ–निष्ठावान समाजसेवी के तौर पर यात्रा की।

श्री रोशनलाल जी आर्यसमाज के बहद् राष्ट्रीय उद्देश्य के प्रति भी जागरुक थे। स्व० श्री प्रकाश वीर शास्त्री एवं रामगोपाल शालवाले (स्वामी आनन्द बोध सरस्वती) पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा जब

ऋषि बोधोत्सव पर भाषण प्रतियोगिता

दिनांक : ६ मार्च, ०८, समयः प्रातः ११.०० बजे
स्थान : रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२
विषय : "राष्ट्र जागरण में महर्षि दयानन्द का योगदान"

प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक विद्यालय/छात्र अपने नाम ५ मार्च, ०८ तक आर्य युवक परिषद् दिल्ली के कार्यालय एच–५४, अशोक विहार, फेज–१, दिल्ली–५२ के पते पर भेजें। विजेता प्रतियोगियों को पारितोषिक एवं स्मति-चिह्न प्रदान किए जाएंगे। प्रत्येक संस्था/विद्यालय से केवल एक बच्चा ही भाग ले सकता है। भाषण प्रतियोगिता की अध्यक्षता महाशय रामविलास खुराना करेंगे। *– ओम प्रकाश, मन्त्री*

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से
ऋषि बोधोत्सव एवं शिवरात्री के अवसर पर

विशाल ऋषि-मेला

६ मार्च, २००८ रामलीला मैदान, नई दिल्ली

यज्ञ : प्रातः ८:०० बजे

-: मुख्य आकर्षण :-

* खेल-प्रतियोगिताएं * भाषण-प्रतियोगिता * मध्याह्न गोष्ठी
* मधुर भजन एवं संगीत * सार्वजनिक सभा तथा * शास्त्रार्थ

सभी आर्यजन समय पर पहुंचकर आयोजन को सफल बनाकर पुण्यलाभ के भागी बनें।

निवेदक :- आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य), १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली

निगमबोध धाट पर किया गया। श्री गुप्ती जी की स्मति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन आर्यसमाज निर्माण विहार में दिनांक १७ फरवरी को हुआ, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ–साथ अनेक आर्यसमाजों एवं अन्यसंस्थाओं के अधिकारियों ने भाग लेकर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

चलती फिरती आर्यसमाज के नाम से जाने जाने वाले स्व० श्री रोशनलाल जी गुप्ता का जन्म कालका (सोलन) से पानीपत आते समय ट्रेन में १५ अप्रैल, १६२५ को श्री गंगाराम के परिवार में हुआ था। विज्ञान विषय में प्रथम श्रेणी से मैट्रीक उत्तीण कर सरकारी सेवा में सरोजनी नगर आ गए। सन् १६५० में ही अपने घर पर सरोजनी नगर में आर्यसमाज की स्थापना की। मन्दिर स्थान मिलने से पूर्व १५ वर्षो तक आर्यसमाज के सभी कार्यक्रम श्री गुप्ता जी के निवास पर ही होते रहे।

वे आर्यसमाज व आर्य जगत् के सभी प्रयोजनों, गौरक्षा- आन्दोलन, हिन्दी रक्षा आन्दोलन, सार्वदेशिक सभा की ओर से आयोजित आर्यसमाज शताब्दी समारोह, आर्य महासम्मेलन आदि सभी कार्यक्रमों में समर्पित निष्काम भाव से सहयोग देते रहे। बम्बई व अमतसर में आयोजित शताब्दी समारोहों में बड़े उत्साहपूर्वक औरों को भी सम्मिलित संसदीय चुनाव में तत्पर थे तो उन्होंने आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को एकत्रित कर तत्परता से बसों में भर उनके चुनाव क्षेत्रों में जाकर चुनाव प्रचार कर उन्हें विजयी बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया।

वह अपने अन्तिम पड़ाव तक आर्य संस्थाओं शिक्षण–संस्थाओं, नेताओं, कार्यकर्ताओं, साधु–संन्यासियों, महापुरुषों–विद्वानों के साथ एक जुट हो निस्वार्थ निष्ठावान समर्पित भाव से आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द के उद्देश के प्रति बिना पदलोलुपता के 'हम दयानन्द के सैनिक हैं' के भाव को साकार करने में समर्पित रहे। महर्षि की जन्मस्थली टंकारा में प्रतिवर्ष जाना उनके लिए एक तीर्थ समान था। प्रचार हेतु वे मॉरीशस भी गए। उनके परिवार में आर्य संस्कारों से पूर्ण तीन पुत्र व तीन पुत्रियां हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मां को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।

– सम्पादक

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली– २ से छपवाकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; फैक्स २३३६५६५६; E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : **ब्र० राजसिंह आर्य** सह सम्पादक : **विनय आर्य** व्यवस्थापक : **सुशील महाजन** सह व्यवस्थापक : **डॉ० ओमप्रकाश भटनागर**